शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय, वाड्रफनगर

जिला - बलरामपुर-रामानुजगंज (छ.ग.)

वार्षिक पत्रिका

अभ्युदय

2021

सत्र 2020-2021

अंक - द्वितीय

वार्षिक पत्रिका

अभ्युदय
2021

संरक्षक
श्री सुधीर कुमार सिंह
प्राचार्य

संपादक
श्री एस. के. पटेल

संयोजक
डॉ. तोयज शुक्ला

सम्पादकीय सदस्य
श्री पंकज कुमार

छात्र सदस्य
श्री मनोज कुमार

प्रकाशन प्रकोष्ठ
शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय, वाड्रफनगर
बलरामपुर (छ.ग.)
www.govtcollegewadrafnagar.ac.in

उमेश पटेल
मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
उच्च शिक्षा, कौशल विकास,
तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार,
विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण विभाग

मंत्रालय कक्ष क्रमांक - एम1-12
महानदी भवन, अटल नगर, रायपुर 492002 (छ.ग.)
फोन : 0771-2510316, 2221316
नि.: डी-1/2, शासकीय आवासीय परिसर, देवेन्द्र नगर, रायपुर
फोन : 0771-2881030
ग्राम व पोस्ट नंदेली, जिला रायगढ़ कार्यालय : 7000477747

क्रमांक : B21/1183

दिनांक : 30/10/2021

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर जिला बलरामपुर-रामानुजगंज द्वारा वार्षिक पत्रिका सत्र "**अभ्युदय**" का द्वितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसमें छात्राओं, प्राध्यापको एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखों, शैक्षणिक गतिविधियों तथा विभागीय प्रतिवेदनों का प्रकाशन किया जायेगा।

ऐसी पत्रिकाएं निःसंदेह छात्र-छात्राओं में अभिव्यक्ति का कौशल विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, साथ ही स्मारिका के माध्यम से महाविद्यालय के गतिविधियों और विशेषताएं भी लोगों तक पहुंचती है।

महाविद्यालय में अध्ययनरत् सभी छात्र-छात्राओं को उनके भविष्य के लिए शुभकामनाऐं एवं महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाईयाँ।

(उमेश पटेल)

प्रति,

प्राचार्य
शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय
वाड्रफनगर,
जिला बलरामपुर–रामानुजगंज (छ.ग.)

प्राचार्य संदेश

हमें प्रसन्नता है कि आप दूरस्थ आदिवासी बाहुल्य ऐसे महाविद्यालय में प्रवेश ले रहे हैं, जो न केवल क्षेत्र में अपनी भव्यता एवं विशालता के लिये जाना पहचाना जाता है, बल्कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊंचाई नापने हेतु अपने पंखो को पसारते हुए छात्र-छात्राओं में बहुआयामी प्रतिभा को विकसित करने के लिए कृत संकल्पित है। यही नहीं यह महाविद्यालय नये जोश और प्रतिभा से सम्पन्न प्राध्यापकों से सुसज्जित है। जिसका सीधा लाभ यहाँ के अध्ययनरत् विद्यार्थियों को मिलेगा, जो प्रतिस्पर्धा के इस दौड़ में अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं ।

यह बताते हुये गर्व की अनुभूति हो रही है कि रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर जिस बहुआयामी उद्देश्यों को लेकर चल रहा है, इससे विद्यार्थी उच्च शिक्षा ग्रहण करते हुये भावी जीवन में नये-नये सोपानों को प्राप्त करने में सक्षम हो सकेगा साथ ही एक अच्छा नागरिक बनते हुये राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा । हमें पूरा विश्वास है कि यहाँ के विद्यार्थी हमारी वृहद् एवं प्रभावी कार्यक्रम ''धरती बचाओं'' से एक बार जुड़ जाने के बाद ताउम्र देश, समाज और समूचे मानव जाति के कल्याण के निमित्त कार्य करते रहने में सक्षम हो सकेगा ।

धन्यवाद

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' के द्वितीय संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका अपने नाम के अनुरुप ही सुदूर आदिवासी बाहुल्य ग्रामीण अंचल के छात्र–छात्राओं को अंधकार रूपी अज्ञानता से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर, अर्थात् 'उदय की ओर' लेकर जाने वाली सिद्ध होगी, जैसे सूर्य के उदय होने से प्रकाश हो जाता है, वैसे ही यह पत्रिका विद्यार्थियों में रचनात्मकता, अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने, विद्यार्थियों की मौलिक रचनाओं को नया आयाम प्रदान करने एवं लेखन कला विकसित कर उन्हें प्रकाशित करने के साथ ही महाविद्यालय की वर्ष भर की गतिविधियों की जानकारी भी लोगों तक पहुँचाने में सहायक होगी। यह महाविद्यालय की महज आधिकारिक पत्रिका ही नहीं बल्कि ''अभ्युदय का आधार'' बनेगी।

महाविद्यालय के विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

– संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

महाविद्यालय का परिचय	01
महाविद्यालयीन कार्यक्रमों की झलकियाँ	02
सफलता का मूल मंत्र	04
विद्यार्थी जीवन	05
जीवन में पुस्तकों का महत्व	06
वार्षिक प्रतिवेदन	07
स्कूल से महाविद्यालय (कॉलेज) की ओर	08
वाह रे कोरोना ये कैसा तेरा वार, आज का रहस्य	09
आर्यभट्ट का गणित में योगदान	10
तुम चलो तो सही, माँ, बेटी	11
वाणी	12
गाँव की स्मृतियाँ, मेरा मिट्टी का गाँव, नानपन के मोर गाँव	13
गरीबी की दास्तां	14
उरांव जनजाति	15
आदिवासियों की जीवनचर्या	16
हमारे सपनों का भारत, आत्मनिर्भर	17
भारत माँ की पुकार, जिनगी के सार	18
महिला शिक्षा	19
सिनेमा और समाज	20
छत्तीसगढ़ के डीपाडीह की ऐतिहासिक रचना, जिंदगी	21
विद्यार्थी जीवन में समय का महत्व, समय का महत्व	22
अपना गाँव, महाविद्यालय में स्वच्छ वातावरण के लिए प्रयास	23
भटकता आज का युवा पीढ़ी	24
प्रकृति का संदेश, तुम्हारी यादें	25
देशभक्ति दोहावली	26
वृक्ष, दैनिक जीवन में विज्ञान के व्यवहारिक अनुप्रयोग	27

महाविद्यालय का परिचय

शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय, वाड्रफनगर सरगुजा संभाग मुख्यालय अम्बिकापुर से वाराणसी अम्बिकापुर मार्ग पर लगभग 90 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर दिशा में स्थित है। यह महाविद्यालय बलरामपुर जिले के वाड्रफनगर तहसील/ब्लॉक में स्थित है, जो दो राज्यों क्रमशः उत्तर में उत्तरप्रदेश, पश्चिम में मध्य प्रदेश की सीमा से लगा हुआ है। इसकी भौगोलिक स्थिति 23 अंश उत्तरी अंक्षाश तथा 83 अंश पूर्वी देशान्तर है, जिसका कुल क्षेत्रफल 11684 वर्ग मीटर है। इस महाविद्यालय की स्थापना 01.07.1989 में हुई है। प्रारम्भ में इस महाविद्यालय की कक्षाएँ 30 छात्र–छात्राओं के साथ शासकीय उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय वाड्रफनगर में संचालित हो रही थी। वर्ष 1994 में यह महाविद्यालय प्राथमिक शाला गौटियापारा में स्थानान्तरित हो गया तथा 20.07.2008 में महाविद्यालय को नवीन भवन मिला। आज महाविद्यालय सुव्यवस्थित ढंग से संचालित हो रहा है। इसी क्रम में 2008 से महाविद्यालय का नामकरण गोंडवाना राज्य की रानी दुर्गावती के नाम पर किया गया।

स्थापना के समय यह महाविद्यालय मध्यप्रदेश शासन के अंतर्गत सरगुजा जिला, बिलासपुर संभाग के गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर से संबद्ध होकर कला संकाय में छः विषयों के साथ संचालित हो रहा था। छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना वर्ष 2000 से यह महाविद्यालय छत्तीसगढ़ राज्य के उच्च शिक्षा विभाग रायपुर द्वारा संचालित होने लगा। वर्ष 2008 में महाविद्यालय की संबद्धता सरगुजा विश्वविद्यालय, सरगुजा, अम्बिकापुर से हो गयी। सन् 2012 से गणित व जीव विज्ञान विषय के साथ विज्ञान विषय में स्नातक प्रारंभ हुआ, जिसमें प्रवेश के लिए क्रमशः 100 एवं 150 सीट निर्धारित है। महाविद्यालय का संचालन 2018 में सरगुजा विश्वविद्यालय के परिवर्तित नाम संत गहिरा गुरू विश्वविद्यालय सरगुजा, अम्बिकापुर से हो रहा है।

वर्तमान में कला संकाय एवं विज्ञान संकाय संचालित हो रहा है। कला संकाय में प्रवेश के लिए 300 सीटें एवं विज्ञान संकाय के लिए 250 सीटें (जीव विज्ञान 150, गणित 100) निर्धारित हैं। शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर में सत्र् 2020–21 से दो नये संकाय (वाणिज्य संकाय एवं बी.सी.ए. संकाय) भी संचालित हो रहे हैं। यह महाविद्यालय वर्तमान में बलरामपुर जिले के महाविद्यालयों में सर्वाधिक छात्र–छात्राओं की संख्या वाला महाविद्यालय है तथा महाविद्यालय दिनों–दिन प्रगति करते हुए नैक मूल्यांकन की दिशा में अग्रसर है।

महाविद्यालयीन कार्यक्रमों की झलकियाँ

महाविद्यालयीन कार्यक्रमों की झलकियाँ

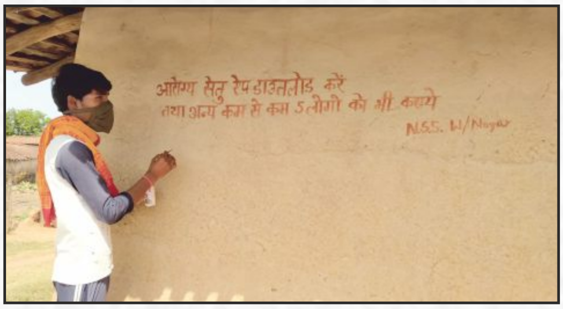

सफलता का मूल मंत्र

सुरेश कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक (प्राणीशास्त्र)

मंजिल उन्हीं को मिलती है,
जिनके सपनों में जान होती है।
पंखो से कुछ नहीं होता,
हौसलों से उड़ान होती है।।

बिना संघर्ष सफलता नहीं मिलती, बिना भटके मंजिल नहीं मिलती, बिना परिश्रम लक्ष्य हासिल नहीं होता। लक्ष्य पाने के लिए सतत् मेहनत जरुरी है। जीवन उसी का सफल है जो लक्ष्य के प्रति सचेत है, सतत् कार्यरत् होकर परिश्रम करता है अतः जीवन की सफलता का मूलमंत्र है- परिश्रम, उत्साह, दृढ़ विश्वास।

परिश्रम मानव जीवन का वह हथियार है जिसके बल पर भारी से भारी संकटों पर भी जीत हासिल की जा सकती है। परिश्रम वह गुण है जिसे अपना लेने पर व्यक्ति के दुःख मिट जाते हैं। परिश्रम सफलता का मूल मंत्र है। ...जीवन की दौड़ में श्रम करने वाला विजयी होता है लेकिन आलसी लोगों को हार का मुँह देखना पड़ता है।

सफलता का महान वृक्ष उन छोटे-छोटे दिखने वाले गुणो में छिपा होता है, जिनकी हम अक्सर अपेक्षा करते हैं। वे हमें इसलिए भी निरर्थक लगते हैं, क्योंकि बचपन से हम उनके बारे में सुनते आ रहे हैं लेकिन अचरज तो तब होता है, जब हम इस पुराने बेकार से दिखने वाले चिराग को घिसते हैं और कामयाबी का जिन्न आ खड़ा होता है। इस कामयाबी के लिए तीन की-वर्ड्स हैं - नॉलेज, स्किल्स और एक्शन। मंजिल कहीं भी हो, रास्ता यहीं से गुजरेगा।

जीवन में हर व्यक्ति सफलता पाना चाहता है लेकिन सफलता पाने के लिए हमें अपना एक आदर्श बनाना जरुरी होता है। जो व्यक्ति अपना आदर्श बना कर रखता है उसे कदमों पर चलते-चलते आसान लग जाती है तो उसे अपने जीवन में सफलता मिल जाती है।

अपना एक लक्ष्य निर्धारित करें :–

जब हम अपने निजी कार्य को एक लक्ष्य निर्धारित कर के काम करते हैं तो वह काम बहुत जल्दी भी हो जाता है। जिसमें समय कम लगता है और वह काम प्रॉपर तरीके से होता है इसलिए आप अपने जिस किसी भी काम में सफलता पाना चाहते हैं तो उस काम के लिए एक लक्ष्य निर्धारित करना होगा।

अपने अंदर आत्म विश्वास बनाऐ रखें :–

आत्म विश्वास हमारे लिए बहुत जरुरी होता है जिस व्यक्ति के अंदर आत्मविश्वास होता है उसे किसी भी तरह के काम करने में डर नहीं लगता व उसे हर काम में सफलता मिलती है।

कई बार लोग कड़ी मेहनत करने के बावजूद भी जल्दी सफलता हासिल कर पाते हैं। बार-बार हार का सामना करने पर भाग्य को दोषी ठहराने लगते हैं। लेकिन व्यक्ति को हार से कभी घबराना नहीं चाहिए डेल कार्नेगी ने कहा है कि असफलता के कारण ही सफलता होती है।

अपने ऊँचे आसमान में उड़ती हुई चील को तो कई बार देखा ही होगा, लेकिन आप में से बहुत कम को मालूम होगा कि इन चीलों में सब्र बहुत होता है। एक बार अपने शिकार को देख लेने के बाद ये चीलें कई-कई दिनों, हफ्तों, महीनों अपने शिकार को बड़ी सावधानी से वॉच करती हैं और बेहतर मौका आते ही शिकार उनके पंजो में होता है।

बार-बार असफल होने पर भी,
उत्साह ना खोना ही सफलता है।

विंस्टन चर्चिल

विद्यार्थी जीवन

डॉ. तोयज शुक्ला
सहायक प्राध्यापक (रसायन शास्त्र)

विद्यार्थी जीवन साधना और तपस्या का जीवन है। यह काल एकाग्रचित होकर अध्ययन और ज्ञान चिन्तन का है, यह काल सांसारिक भटकाव से स्वयं को दूर रखने का काल है, विद्यार्थी के लिए यह जीवन अपने को ठोस नींव प्रदान करने का सुनहरा अवसर है। विद्यार्थी जीवन को मनुष्य के जीवन की आधारशीला कहा जाता है। इस समय वह जिन गुणों और अवगुणों को अपनाता है, वह आगे चलकर वैसे ही चरित्र का निर्माण करता है। अतः विद्यार्थी जीवन सभी के लिए महत्वपूर्ण होता है। विद्यार्थी जीवन मानव जीवन का स्वर्णिम काल होता है, इस काल में विद्यार्थी सांसारिक दायित्वों से मुक्त होता है, फिर भी उसे अनेक दायित्वों व कर्तव्यों का निर्वहन करना पड़ता है। एक आदर्श विद्यार्थी वह है जो परिश्रम और लगन से अध्ययन करता है और सद्गुणों को अपनाकर स्वयं का ही नहीं अपितु अपने माता-पिता का नाम ऊँचा करता है। वह अपने पिछे ऐसे उदाहरण छोड़ जाता है जो अन्य विद्यार्थियों के लिए अनुकरणीय हो जाता है। विद्यार्थी जीवन बहुत ही संघर्षशील होता है। विद्यार्थी जीवन पाँच वर्ष की अवस्था से शुरु होकर युवावस्था में पूर्ण रुप से सम्पन्न होता है। विद्या को प्राप्त करने वाले जीवन को विद्यार्थी जीवन कहते हैं। एक विद्यार्थी का जीवन कठिन परिस्थितियों से होकर गुजरता है, विद्यार्थी लगातार आपने जीवन में शिक्षा को प्राप्त करने के लिए दिन-रात मेहनत और लगन के कारण अपने सपनों को साकार करता है। उसे ज्ञान प्राप्त करने के लिए कॉक की तरह चेष्टा, बगुले की तरह ध्यान, कुत्ते की तरह स्वान, अल्पाहारी तथा घर त्यागी आदि नियमों का पालन करना पड़ता है। विद्यार्थी जीवन किसी भी व्यक्ति के जीवन का अहम और प्रथम पड़ाव होता है। इस समय बच्चों का शारीरिक एवं बौद्धिक विकास होता है। इस समय विद्यार्थी एक कच्चे घड़े के समान होता है, जिसे ठोक-पिटकर सहलाकर किसी भी आकार में ढ़ाला जा सकता है, इस समय विद्यार्थी को एक उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का बड़ महत्व होता है, यदि मनुष्य अनुशासन में जीवन व्यतित करता है तो वह स्वयं के लिए सुखद एवं उज्जवल भविष्य निर्धारित करता है। यदि किसी व्यक्ति के भीतर अनुशासनहीनता होती है तो वह स्वयं के लिए कठिनाईयाँ उत्पन्न करता है और साथ ही साथ असफलता भी प्राप्त करता है। इसी प्रकार और भी ऐसी बहुत सी महत्वपूर्ण बाते हैं जो विद्यार्थी जीवन में आवश्यक होता है। विद्यार्थी का उचित लगन, उनका कर्तव्य, समाज के प्रति योगदान आदि उन्हें सफल और बेहतरिन भविष्य की ओर ले जाती है। विद्यार्थी जीवन किसी भी मनुष्य के जीवन का सबसे अच्छा और यादगार काल होता है। विद्यार्थी को अपने विद्यार्थी जीवन काल में उचित शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल-कूद और व्यायाम पर पूर्ण रुप से ध्यान रखना चाहिए तथा उन्हें विद्यार्थी जीवन में बहुत ही परिश्रम और लगनशील होना चाहिए। हर व्यक्ति को अपने जीवन में सफल होने के लिए उचित शिक्षा प्राप्त करना बहुत ही आवश्यक है।

जीवन में पुस्तको का महत्व

पंकज कुमार
ग्रंथपाल

पुस्तकों को एक व्यक्ति का सबसे अच्छा दोस्त माना जाता है। एक अच्छी किताब हमारे मूड को तुरंत उभार सकती है और हम पर गहरा असर छोड़ सकती है। इस प्रकार समझदार बनने के लिए विभिन्न प्रकार की पुस्तकों को पढ़नें की अत्यधिक अनुशंसा की जाती है। एक व्यक्ति जो विभिन्न प्रकार की पुस्तकों को पढ़ता है और नियमित रुप से पढ़नें के लिए प्रेरित करता है, वह सांसारिक बुद्धिमान होता है, वह विभिन्न स्थितियों में उन लोगों की तुलना में बेहतर ढंग से संभाल सकता है। जो पढ़ने में आनाकानी करते हैं।

पुस्तकें मित्रों मे सबसे शांत व स्थिर है, यह सलाहकारों मे सबसे सुलभ और बुद्धिमान है और शिक्षको में सबसे धैर्यवान। पुस्तकें मनुष्य के मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक, चारित्रिक एवं राजनैतिक विकास में सहायक होती है। पुस्तकों के महत्व को बतलाने के लिए यूनेस्को ने 23 अप्रैल 1995 से तथा भारत सरकार द्वारा 23 अप्रैल 2001 को विश्व पुस्तक दिवस के रुप में मनाने की घोषणा की।

महात्मा गाँधी ने कहा है - ''पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है। क्योंकि पुस्तके अन्तः करण को उज्ज्वलित करती है।

पुस्तकों की महत्व को स्वीकारते हुए लोकमान्य तिलक कहते है कि - ''मैं नरक मे भी पुस्तकों का स्वागत करुंगा क्योंकि इनमे वह शक्ति है कि जहाँ ये होगी वह जगह अपने-आप स्वर्ग बन जायेगा।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने पुस्तकों के महत्व पर लिखा है कि तोप, तीर, तलवार में जो शक्ति नहीं होती वह शक्ति पुस्तकों मे होती है। तलवार आदि के बल से तो हम केवल दूसरों का शरीर जीत सकते हैं, किन्तु मन को नहीं लेकिन पुस्तकों मे वह शक्ति होती है जिसके बल पर हम दूसरों के मन और हृदय जीत सकते हैं।

कुछ लोगों का मानना है कि इन्टरनेट एवं ई-पुस्तकों की उपलब्धता के बाद कागजी पुस्तकों का लोगों मे लगाव धीरे-धीरे कम होता जायेगा किन्तु ऐसा मानना किसी भी दृष्टि से सही नहीं है। इन्टरनेट पुस्तकों का विकल्प कभी भी नहीं हो सकता है। हाल ही में हुए सर्वे से पता चलता है कि पुस्तकों का विकल्प इन्टरनेट नहीं है। इस सर्वे रिपोर्ट में यह तथ्य सामने आया की इन्टरनेट पर पुस्तकों के अध्ययन में एकाग्रता बनाने में कठिनाई आती है। साथ ही साथ आँख से संबंधित समस्याएँ भी आती है। अधिकांश छात्रों के साथ यह पाया गया कि वे जब इन्टरनेट पर अध्ययन करने बैठते हैं तो उनका ध्यान अन्य सामग्री को खोलने में (सोशल मिडिया) ज्यादा समय व्यतित होता हैं।

वार्षिक प्रतिवेदन

ज्योति पाण्डेय
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

वर्तमान सत्र कोरोना के कारण जुलाई से प्रारंभ नहीं हो सका। तब तक सम्पूर्ण गतिविधियाँ ऑनलाईन के माध्यम से चलती रहीं जिसमें छात्र-छात्राओं ने अपने घरो में रह कर ही कोविड गाइडलाईन का पालन करते हुए अपनी सहभागिता पूर्ण की। इस दौरान जुलाई में विश्व जनसंख्या दिवस और वृक्षारोपण कार्यक्रम अपने घरों से ही संपादित किया गया। एन.एस.एस. के स्वयं सेवकों द्वारा मास्क वितरण, दिवाल लेखन, जन-जागरुकता आदि गतिविधियों को संचालित किया जाता रहा। महा-विद्यालय में 03.09.2020 को फिट इण्डिया रन आयोजित की गई जिसमें कुछ विद्यार्थी महाविद्यालय आकर और कुछ ने घरों से भाग लिया। संविधान दिवस :- संविधान दिवस के अवसर पर कुछ छात्र-छात्राओं द्वारा शपथ दिलाई गई। ब्लू ब्रिगेड द्वारा कोरोना महामारी के दौरान कुछ छात्र-छात्राओं के द्वारा अपने आस-पास के बच्चों को पढ़ाया गया। 12 जनवरी को कुछ स्वयं सेवकों द्वारा युवा दिवस मनाया गया इस अवसर पर ऑनलाईन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसमें महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। 30 जनवरी को शहीद दिवस भी महाविद्यालय में आयोजित की गई थी। इसी बीच ऑनलाईन माध्यम से कक्षाएँ संचालित होती रही और सेमिनार भी आयोजित किये जाते रहे। जिसमें मुख्य रुप से ब्रह्मकुमारी संस्थान, डाक्टरों द्वारा स्वास्थ्य जानकारी, धुम्रपान निषेध दिवस एवं पर्यावरण दिवस पर सेमिनार आयोजित हुई। छत्तीसगढ़ शासन के आदेशानुसार महाविद्यालय में भौतिक कक्षाओं का संचालन प्रारंभ की गई। भौतिक कक्षाओ में छात्रो ने एक नये उत्साह के साथ आना प्रारंभ किया। सड़क सुरक्षा पर प्रतियोगिता आयोजित कराई गई।

महाविद्यालय के गुणवत्ता विकास के लिए भूतपूर्व छात्रों की बैठक बुलाई गयी जिसमें उनके विचार प्राप्त हुए। 08 मार्च को अंर्तराष्ट्रीय महिला दिवस पर व्याख्यान आयोजित हुई थी जिसमें काफी संख्या में छात्र/छात्राएँ उपस्थित हुए थे। 10 मार्च को अभिभावक शिक्षक संवाद आयोजित हुई। कुछ दिनों के बाद माह अप्रेल में भौतिक कक्षाएँ पुनः बन्द हो गयीं। इस कारण सभी गतिविधियाँ पुनः ऑनलाइन माध्यम से ही प्रारंभ हुई और समस्त गतिविधियाँ घरों से ही आयोजित कराई जाती रही। जो छात्रों के अध्ययन में एक बड़ी क्षति साबित हुई। छत्तीसगढ़ सरकार की विभिन्न योजनाओं, ऑनलाईन एवं महाविद्यालय द्वारा किये जा रहे प्रयासों के कारण हम सीखतें और ज्ञानार्जन करते रहे। अपेक्षा करती हूँ की ऐसी वैश्विक महामारी दूबारा नहीं आये और पहले की तरह स्थितियाँ सामान्य हो जाये।

स्कूल से महाविद्यालय (कॉलेज) की ओर

मनोज कुमार
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

मैं मनोज कुमार बी.एस.सी. तृतीय वर्ष का छात्र हूँ। मैनें सत्र 2018-19 में शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर में बी.एस.सी. प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया था। इन तीन वर्षो के अंदर मेरा क्या अनुभव रहा मै बताने जा रहा हूँ -

जब हम स्कूल से महाविद्यालय में प्रवेश करते हैं तो हम कई बदलावों से गुजरते हैं। कॉलेज किसी के जीवन का एक अतिस्मरणीय अनुभव है और यह हमारे व्यक्तित्व और भविष्य को एक नया आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। स्कूल में हम अपने दोस्तों या शिक्षकों पर निर्भर थे, कॉलेज हमें स्वतंत्र होना सिखाता है।

अन्य महाविद्यालयों की अपेक्षा हमारे महाविद्यालय में ड्रेस कोड अनिवार्य रुप से लागू है। जब मैं स्कूल में था तब वहाँ लैब मे प्रयोग के लिए उतनी उपकरण सुविधा उपलब्ध नहीं थी जितना की कॉलेज में आने के बाद देखने/प्रयोग करने को मिलती है। महाविद्यालय में एक पुस्तकालय भी है जहाँ हमें नये प्रकार के पुस्तकों का अध्ययन करने को मिलता है। हमारे महाविद्यालय में खेलने के लिए खेल मैदान व कार्यक्रम के लिए एक बड़ा हॉल भी है।

शिक्षकों की गुणवत्ता एवं उनका प्रभावशाली शिक्षण शैलियाँ वास्तव में हमारे कॉलेज को असाधारण बनाती है। हमारे महाविद्यालय में वार्षिक उत्सव भी मनाया जाता है जिसमें छात्र-छात्राओं की बढ़-चढ़ कर सहभागिता होती हैं। महाविद्यालय हमें हर दिन नई चुनौतियों के लिए उजागर करता है।

स्कूल में छात्रों को क्लास मॉनीटर होने का मौका मिलता है, जबकी कॉलेज में एक छात्र को कॉलेज अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव और उप सचिव जैसे प्रमुख पदों के लिए खुद को नामित करने का मौका मिलता है। समय-समय पर हमारे कॉलेज में विभिन्न प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। भाग लेने वाले प्रतियोगियों को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कार देकर उन्हें सम्मानित किया जाता है। हमारे महाविद्यालय में एन.एस.एस. का कार्यक्रम भी आयोजित किया जाता है। महाविद्यालय में हम नये चेहरे दिखते हैं और एक अनुठे वातावरण का अनुभव करते हैं, साथ ही हमें सही फैसले लेने और कड़ी मेहनत से पढ़ाई करके अपने कैरियर/भविष्य को आकार देने का मौका मिलता है।

इस तरह कॉलेज हमारे भविष्य को सँवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साथ ही हमें रुचि के क्षेत्र चुनने में मदद करता है।

वाह रे कोरोना ये कैसा तेरा वार

चंद्रवती यादव
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

सारी दुनिया में मचाया तुने हाहाकार है।
वाह रे कोरोना ये कैसा तेरा वार है।।
हम सबकी भी अब यही हुंकार है।
तुझे हरा कर ही अब हम सबका बेडा पार है।
वाह रे कोरोना ये कैसा तेरा वार है।
बुजुर्गो और बच्चों पर किया तुने अत्याचार है।
इसलिए इनको रहना ज्यादा होशियार है।
भीड़-भाड़ वाली जगहो में न जाना अगर समझदार है।
भारत का हर युवा अब लड़ने को तैयार है।।
कोरोना से लड़ने का अभी एक ही हथियार है।
सावधानी ही इसका एक असाधारण उपचार है।।
इसलिए तो जागरुकता अभियान चला रही
सरकार है।
रहना होगा सतर्क क्योंकि हम सभी नागरिक जिम्मेदार हैं।
वाह रे कोरोना ये कैसा तेरा वार है।

आज का रहस्य

कु. रेखा यादव
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

- नींद आँखे बंद करने से नहीं,
  इन्टरनेट बंद करने से आती है।
- पहले लोग बेटा के लिए तरसते थे,
  और आज डेटा के लिए।
- आज की सबसे बड़ी दुविधा - मोबाईल बिगड़ जाये जो बच्चे जिम्मेदार, बच्चे बिगड़ जायें तो मोबाईल जिम्मेदार।
- बदल गया जमाना पहले माँ का पैर छू कर निकलते थे,
  अब मोबाईल की बैटरी फूल करके निकलते हैं।
- कुछ लोग अचानक फोन का कैलेंस (ठंसंदबम) खत्म हो जाता है तो इतना परेशान होते है मानो जैसे सुबह तक वह जिन्दा ही नही रहेगा।
- कुछ लोग फोन की बैटरी की 2-1 प्रतिशत हो जाती है तो चार्जर की तरफ ऐसे भागते हैं......
  जैसे उससे कह रहे हों तुझे कुछ नहीं मिलेगा भाई आँख बंद मत करना मैं हूँ ना... सब ठीक हो जायेगा।
- कुछ लोग फोन में ऐसे पैटर्न लगाते है जैसे ISI की सारी गुप्त फाईलें उनके फोन में ही पड़ी हो।

आर्यभट्ट का गणित में योगदान

कु. अंशु कुशवाहा
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

आर्यभट्ट :–

आर्यभट्ट प्राचीन भारत के एक महान ज्योतिषविद् और गणितज्ञ थे। उनकी रचना आर्यभटीय ग्रंथ में ज्योतिषशास्त्र के अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन है। इसी ग्रंथ में इन्होने अपने जन्मस्थान का उल्लेख किया है जिसके अनुसार उनका जन्म कुसुमपुर और जन्मकाल शक संवत् 398 में लिखा है। उनका जन्मकाल, स्थान निश्चित नहीं है। तथ्यों के अनुसार उनका जीवन काल 476 से 550 सी.ई. तक था। वर्तमान पटना (बिहार) का प्राचीन नाम कुसुमपुर था लेकिन आर्यभट का कुसुमपुर दक्षिण में था। एक अन्य मान्यता के अनुसार उनका जन्म महाराष्ट्र के अश्मक देश में हुआ था।

वे उच्च शिक्षा के लिए कुसुमपुर गये और कुछ समय वहीं रहे। कुसुमपुर को पाटलिपुत्र, आधुनिक पटना के रुप में पहचानते हैं। एक श्लोक में उल्लेख किया गया है कि आर्यभट्ट कुसुमपुर में एक संस्था (कुलपा) के प्रमुख थे क्योंकि नालंदा विश्वविद्यालय उस समय पाटलिपुत्र में था और एक खगोलीय वेधशाला थी, यह अनुमान लगाया जाता है कि आर्यभट्ट नालंदा विश्वविद्यालय के प्रमुख थे साथ ही आर्यभट्ट को बिहार के तारेगाना में सूर्य मंदिर में एक वैधशाला स्थापित करने के लिए भी जाना जाता है।

आर्यभट्ट द्वारा रचित तीन ग्रंथों की जानकारी आज भी उपलब्ध है - दशगीतिका, आर्यभटीय और तंत्र, लेकिन जानकारों के अनुसार उन्होनें और एक ग्रंथ लिखा था- आर्यभट सिद्धांत। इस समय उसके केवल 34 श्लोक ही उपलब्ध हैं, उनके इस ग्रंथ का सातवें शतक में व्यापक उपयोग होता था। लेकिन इतना उपयोगी ग्रंथ लुप्त कैसे हो गया इस विषय पर कोई निश्चित जानकारी नहीं मिलती।

शून्य का अविष्कार :–

उन्होनें गणित के अतिरिक्त खगोल विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। गणित के योगदान में उनकी सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रमुख उपलब्धि स्थानीय मान एवं शून्य ज्ञान था। शून्य (0) एक अंक है जो संख्याओं के निरुपण के लिए प्रयुक्त आज की सभी स्थानीय मान पद्धतियों का अपरिहार्य प्रतीक है, इसके अलावा यह एक संख्या भी है। दोनों रुपों मे गणित में इसकी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। प्राचीन (बख्शाली पाण्डुलिपि) काल में, जिसका कि सही काल अब तक निश्चित नहीं हो पाया है परन्तु निश्चित रुप से उसका काल आर्यभट्ट के काल से प्राचीन है, शून्य का प्रयोग किया गया है और उसके लिए उसमें संकेत भी निश्चित है।

तुम्हे लिखते हुए,,

''अनगिनत भावों से भरा मैं, शून्य हो जाता हूँ,
शब्दो में अभिव्यक्ति का, सामर्थ्य नहीं तलाश पाता हूँ..!
क्या ये मेरी लेखनी की विफलता है, या तुम्हारे प्राकृत्व के विस्तार का प्रभाव...?
जो स्वयं असीमित हो, उसे शब्दो में कैसे ढ़ालूँ मैं !''

तुम चलो तो सही

राह में मुश्किल होगी हजार, तुम दो कदम बढ़ाओ तो सही, हो जायेगा हर सपना साकार, तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।

मुश्किल है पर इतना भी नहीं, कि तू कर ना सके, दूर है मंजिल लेकिन इतना भी नहीं, कि तू कर ना सके, तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।

एक दिन तुम्हारा भी नाम होगा, तुम्हारा भी सत्कार होगा, तुम कुछ लिखो तो सही, तुम आगे बढ़ो तो सही, तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही

सपनों के सागर में तुम कब तक गोते लगाते रहोगे, तुम एक राह चुनो तो सही, तुम उठो तो सही, तुम कुछ करो तो सही, तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।

कुछ ना मिला तो कुछ सीख जाओगे, जिन्दगी का अनुभव साथ-साथ ले जाओगे, गिरते पड़ते संभल जाओगे, फिर एक बार तुम जीत जाओगे, तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।

अंजु प्रजापति, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

माँ

घुटनों से रेंगते रेंगते कब पैर पर खड़ा हुआ,
तेरी ममता की छांव में जाने कब बड़ा हुआ।

काला टिका दूध मलाई, आज भी सब कुछ वैसा है,
मै हीं मै हूँ हर जगह, माँ प्यार ये तेरा कैसा है।

सीधा-साधा भोला-भाला, मैं ही सबसे अच्छा हूँ,
कितना भी हो जाऊ बड़ा, माँ मै आज भी तेरा बेटा हूँ।

कु. लीलावती, बी.ए. द्वितीय वर्ष

बेटी

जो माँ है वही तो सास है
फिर माँ क्यूँ अच्छी,
सास क्यूँ बुरी
जो पापा हैं वही तो ससुर हैं।
फिर पापा क्यूँ अच्छे,
ससुर क्यूँ बुरे ?

जो बेटी है वही तो बहू है
फिर बेटी क्यूँ लाडली,
बहू क्यूँ बुरी है ?
बेटी की तबीयत हो खराब तो चिंता जताये
बहू की तबीयत हो खराब तो नाटक बताये।

बेटी का दुःख ही क्यूँ
सीने को चीरता है ?
बहू से नजरें क्यूँ
नफरत भरी है ?
लोगो ने बेशक बहू पर तेल डाला
जब भी जली है बेटी ही जली है !
वो किसी कि भी बेटी हो बेटी ही जलेगी।

पालन पटेल, बी.एस.सी द्वितीय वर्ष

वाणी

संजय कुमार
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

आज से लगभग हजारों वर्षो पहले कि बात है एक विशालकाय क्षेत्र में फैला एक राज्य संतगढ़ था। इस राज्य के एक राजा हुआ करते थे जिनका नाम रामदास था। राजा रामदास अपने कर्मकाण्डों से अपने राज्य के साथ-साथ संतगढ़ राज्य के पड़ोसी राज्यों में भी सम्मान के पात्र हुआ करते थे। पड़ोसी राज्यों मे अच्छी मित्रता होने के कारण राजाओं को ज्यादा युद्ध का सामना नहीं करना पड़ता था। सीमा के राज्य संतगढ़ को एक सुरक्षा कवच प्रदान करते थे, जिससे यहाँ शत्रुओं के आक्रमण करने का स्वप्न, स्वप्न बनकर ही रह जाता।

एक समय की बात है, जब संतगढ़ के राजा रामदास विवाह के योग्य हो गये, तब उनके महामंत्री ने राजा रामदास जी से विवाह के लिए आग्रह किया। राजा भी सोंचे की हमें अब विवाह कर लेनी चाहिए। राजा शीघ्र अपने महामंत्री से कहा की हम विवाह के लिए तैयार हैं।

अब महामंत्री सुन्दर कन्या की तलाश में लग गये, तभी उन्हें पता चला की एक राज्य उदयपुर जहाँ स्वयंवर होने वाली थी। उदयपुर राज्य संतगढ़ के पड़ोसी राज्यों से भी बहुत दूर था। स्वयंवर की सूचना महामंत्री द्वारा राजा को दिया गया। सूचना मिलने के शीघ्र ही रामदास जी का निर्णय आता है कि हम उदयपुर के स्वयंवर जाने के लिए तैयार हैं। उनके इस निर्णय को लेकर कई राजा के सुभचिंतकों ने नाराजगी जताई पर राजा अटल थे। राजा रामदास जाने के पूर्व अपने दरबार के समक्ष एक बहुत बड़ी शर्त रखी कि राजा एक आम मनुष्य की तरह बिना सुरक्षा के अपने राज्य से उदयपुर के लिए निकलेंगे। राजा रामदास के उदयपुर जाने की सूचना जब संतपुर राज्य के शत्रुओं को चला तो वे राजा को मारने के लिए कई रणनीति बनाने लगे। यही सूचना जब संतगढ़ राज्य के पड़ोसी राज्यों के राजाओं को चली तो, पड़ोसी राजाओं को राजा रामदास जी की सुरक्षा की चिंता हुई और सभी पड़ोसी राज्यों ने सेना की एक बड़ी-बड़ी टोली राजा की सुरक्षा में भेज दी गई। हॉलाकि राजा रामदास अन्य राजाओं के निर्णय से असहमत थे, लेकिन अंततः उन्हें सहमति देनी पड़ी।

जब राजा शत्रुओं के राज्यों में प्रवेश किये तो सभी शत्रु राजा रामदास जी की सुरक्षा को देखकर पीछे हट गये। अब शत्रु राज्यों के राजा भी स्वयंवर के लिए निकल गये। आखिरकार वो दिन आ ही जाता है जब राजा रामदास उदयपुर पहुँच जाते हैं तब राजा रामदास जी का स्वागत अन्य राजाओं की अपेक्षा अच्छा नहीं होता है। राजा रामदास बहुत ही समझदार इंसान थे, इसलिए उनके स्वागत का किसी भी प्रकार का सिकवा उनके हृदय में नहीं था। स्वयंवर का कार्यक्रम प्रारंभ किया जाता है। सभी राजा अपनी राजशादी वस्त्र के साथ अपनी-अपनी गद्दी पर विराजमान होते हैं। राजा रामदास भी अपने सामान्य वस्त्र के साथ अपनी गद्दी पर विराजते हैं।

जब राजा रामदास दरबार में नजर डालते हैं, तो देखते हैं कि लगभग सारे राजा उन्हीं हो शत्रुता की दृष्टि से घूर रहे है। उदयपुर राज्य के राजा कार्यक्रम को आगे बढ़ाने को कहते हैं। सभी राजा अपने-अपने साथ लाये राजसी औजार का उपयोग कर अपनी-अपनी वीरता बारी-बारी से प्रगट करना प्रारंभ कर दिये। सभी राजाओं ने लगभग अपनी-अपनी वीरता भलीभांती प्रगट किया अंत में जब राजा रामदास जी की बारी आती है तो स्वयंवर में आये सभी राजा उन्हें देख कर हँसनें लगे, और हँसते भी क्यों नहीं क्योंकि वे किसी भी तरह से एक राजा नहीं लगते थे, न ही उनके पास राजसी वस्त्र व न तो राजसी औजार थे।

जब राजा रामदास अपनी विरता अपनी वांणी को औजार बना कर प्रस्तुत किया तो सारे-के-सारे राजा उनके बातों को सुनकर शांत हो गये और सभी राजाओं के आँखो में आंसू आ गये। अंततः जब स्वयंवर के निर्णय के आने से पूर्व दरबार में बैठे सभी राजाओं के जुबान पर सिर्फ राजा रामदास जी का नाम था।

गाँव की स्मृतियाँ

चलो चलें गाँवों की ओर
खेतों और खलिहानों की ओर
जहाँ बीता बचपन का दौर
हरियाली फैली चहुं ओर
शुद्ध हवा का है जहाँ ठौर
चलो चलें गाँवों की ओर
खेतो और खलिहानों की ओर
द्वेष, फरेब, पाखंड से दूर
मिलकर रहते सब किसान मजदूर

मिले जहाँ पंछी,
नदियाँ और मोर
चलो चलें गाँवों की ओर
खेतों और खलिहानों की ओर
जहाँ से आता खाने का कौर
प्यार दुलार मिले घनघोर
स्नेह प्रेम मिलता हर छोर
चलो चलें गाँवों की ओर
खेतों और खलिहानों की ओर

कु. अन्नु कुशवाहा, बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

मेरा मिट्टी का गाँव

कुछ मुरझाए हुए फूल, कुछ गाँव से लिया धूल।
कुछ चिड़ियों की चहक, कुछ मधुबन की महक।
पीपल की छांव, कुछ बुजुर्गो का लिया पाँव।
वो माँ की आंचल की धनी मुझ पर आशीर्वाद का भाव।
याद आया मेरा मिट्टी का गाँव।।

रक्षाबंधन है आया मेरी सूनी है कलाई।
आई है दिवाली, लौ मुझे ही जलाई।
अबकी होली नें बेडी लगाई मेरे पाँव।
याद आया मेरा मिट्टी का गाँव।।

चंद सिक्कों की आहट ने मुझे है भगाया।
दूर उनसे किया, जिसने मुझें जीना सिखाया।
आ रिश्तों के मरहम से भर दें मेरा घाव।
याद आया मेरा मिट्टी का गाँव।।

वो भैया का दुलार, तेरी प्यारी बहना का प्यार।
छोंड आया मैं कैसे वो नुक्कड के यार।
आज पहचाना मैनें रिश्तों का वो भाव।
याद आया मेरा मिट्टी का गाँव।।

जब थके आँख अपना, चाँद तारों को ताकना।
रोज आती थी निंदिया, लेके झोले में सपना।
कैसी जर्जर हुई मेरी, सपनों का नांव।
याद आया मेरा मिट्टी का गाँव।।

रामनिवास पटेल, अतिथि व्याख्याता (हिन्दी)

नानपन के मोर गाँव

ददा के मया दुलार, मोर दाई के अचरा के छांव।
याद आथे संगी मोला, नानपन के मोर गाँव।।

पेंड़ तरी खेलन भटकउला।
गउ दईहान के गिल्ली अउ डंडा।।
आषाण के पानी, अउ कागज के मोर नांव-
याद आथे संगी मोला, नानपन के मोर गॉव

लकड़ी के बने, रेंहचुल ढेलउवा।
बइला चरई अउ, डंडा कोलउवा।।

होत बिहनिया कुकरा बासय, अउ कउंवा करै कांव-कांव।
याद आथे संगी मोला, नानपन के मोर गाँव ...।

स्कूल ले आके, तरिया तउडई।
कागज के बने, पतंग उड़ई।।
ओ टेड़गा रुख, अउ मोर छोटे-छोटे पांव
......
याद आथे संगी मोला, नानपन के मोर गाँव।

श्री बाबूलाल बंजारे, अतिथि व्याख्याता, अंग्रेजी

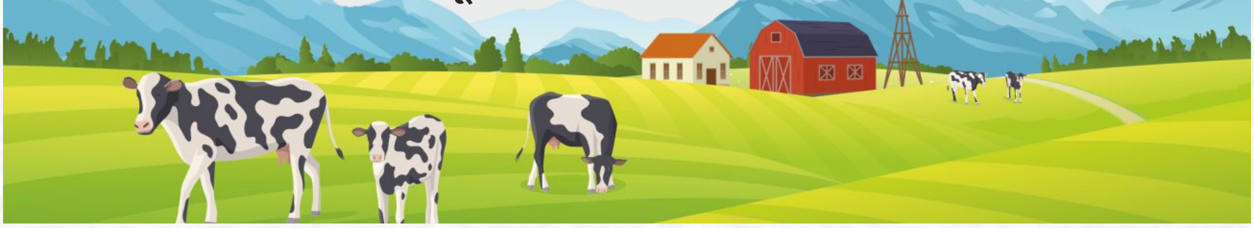

गरीबी की दास्तां

अशोक कुमार
बी.ए. द्वितीय वर्ष

हाय रे किस्मत !
किस कलम से लिखी मेरे भाग्य की सूरत।

बचपन में हमने जो गरीबी झेली
धूल, मिट्टी में ही खायी बेली।

टूटी फटी झोपड़ी मिली,
उसी में विताये पूर्वज अपनी हर उमर
क्या हमारा भी बितेगा ऐसा उमर ? नहीं. . .

फिर उठ देखा बाहर का नजारा
हमसे ऊपर है गाँव सारा।

बच्चे उनके भाँति-भाँति व्यंजन खाये,
देख उसे हमारा जी ललचाये।
लेकिन गरीबी को कौन जाने ?

बच्चे उनके पढ़ते-लिखते,
हम दो राटी के लिए भटकते फिरते।

मन को मारे चुप रह जाते,
विरह वेदना में दिन ढल जाते।

सोचा ! गरीबी कैसे मिटायें ?
अज्ञानता ने ही भ्रम फैलाये।

फिर सोचा किसी से मदद ली जाये,
तब लोग गरीब कह कर हमें चिढ़ाये।
उन्हें गरीबी की दशा क्या समझ में आये ?

मांगी जब सहायता उनसे हाथ जोड़कर,
धन की घमंड ने दिया हमें ठोकर।
इसी बात ने मन को ठेस पहुँचाया,
ठोकर खाकर ही समझ में आया।

मन में एक नया विचार आया . . .

क्यों न पढ़नें-लिखनें जायें
गरीबी को जड़ से मिटायें।

जैसे पेट के लिए अन्न जरुरी,
वैसे ही शिक्षा बिना है जीवन अधुरी।

सोचा दिन-रात मेहनत करुँगा
इसी हथियार से गरीबी दूर करुँगा।

हे भारतवर्ष के कर्मवीर
उठो, जागो और खोलो अपने नसीब

तुम देर तक सोते रहोगे,
जीवन भर रोते रहोगे।

मेहनत कर हमने यह खुशहाली पायी,
जीवन में फिर से हरियाली छायी।

परिश्रम कर मैं किया ये सच,
खुद के मेहनत से लिखा जा सकता है भाग्यरत्।
''शिक्षा का अलख जगायें,
गरीबी को दूर भगाएँ।''

उरांव जनजाति

कु. सुमित्रा
बी.ए. तृतीय वर्ष

उरांव जनजाति भारत के प्रमुख अनुसूचित जनजातियों में एक है। छत्तीसगढ़ में उरांव जनजाति की संख्या करीब 01 लाख 20 हजार है। झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ में उरांव एक महत्वपूर्ण अनुसूचित जनजाति है। इस जनजाति के लोग अपने-आप को ''कुरुख'' अर्थात् मानव कहते है। भारत के अन्य क्षेत्रों में ये ''धांनगर'' अर्थात् पहाड़ी लोगों के नाम से जाने जाते हैं।

प्रजातिय दृष्टी से इनमें दक्षिण भारत कि द्रविड़ प्रजाति के तत्व पाए जाते हैं, ऐसा कहा जाता है कि प्रारंभ में ये लोग दक्षिण में 'कोंकण' तट पर रहते थे। वहाँ से ये उत्तर भारत में आये और उसके बाद घूमते-घूमते झारखण्ड में निवास करने लगे। ये लोग द्रविडत्र भाषा परिवार की एक भाषा उरांव भाषा बोलते हैं। उरांव लोग मिट्टी कि झोपड़ बना कर रहते हैं। इनके घर में पशुओं सुअर, मूर्गे-मूर्गीयों के लिए अलग स्थान होता है।

उरांव लोग अपने ही जनजाति में विवाह करते हैं, किन्तु वे गोत्र बहिर्विवाह के नियमों का पालन करते हैं। अन्य जाति या जनजाति में विवाह करने वाले को समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। विवाह करने के लिए कोई-न-कोई व्यक्ति मध्यम की भूमिका निभाता हैं। वही वधु-मुल्य तय करवाते हैं। लड़का अपने भावी ससुर के परिवार में एक या दो वर्ष तक सेवा करता है। उरांव लोग में युवागृह पाये जाते हैं, जिसे जोंकरपा या धुमकूरिया कहते हैं। लड़कियों के लिए अलग युवागृह होता है जिसे ''एलरपा'' कहते हैं। गाँव के सभी लड़के जिनकी आयु 09 से 11 वर्ष हो जाती है, उन्हें धानरगा कहते हैं।

उरांव लोगों कि राजनीतिक जीवन का आधार ग्राम पंचायत और क्षेत्रीय पंचायत है। गाँव का प्रशासन पहान (गाँव का पुजारी) एवं महतो द्वारा चलाया जाता है। महतो 'महतो' खुंट से एवं पहान 'पहान' खुंट से लिया जाता है। उरांव लोग भी दक्षिणी भारत के अन्य द्रविड़ जनजातियों कि भाँति आत्मावाद में विश्वास करते हैं। गॉव की मुखिया द्वारा विभिन्न देवी-देवताओं कि पूजा करवाई जाती है जिसमें मूर्गो एवं बकरे की बलि चढ़ाई जाती है।

आदिवासियों की जीवनचर्या

कामिनी पटेल
बी.ए. द्वितीय वर्ष

आदिवासियों का परिचय : आदिवासी शब्द दो शब्दों 'आदि' और 'वासी' से मिलकर बना है। इसका अर्थ मूल निवासी होता है। पुरातन काल में आदिवासियों को आत्विका कहा गया है। भारत में प्रमुख आदिवासी समुदायों में भीलाला, धानका, गोंड़ (पंडो, कुम्हार, धनुहार) मुण्डा, खडिया, उरांव लोहार, परधान। आदिवासी मुख्य रुप से भारतीय राज्यों उडीसा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, आदि में बहुसंख्यक व गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, झारखण्ड में अल्पसंख्यक है जबकि भारतीय पूर्वोत्तर राज्यों में बहुसंख्यक है, जैसे - मिजोरम। विश्व आदिवासी दिवस 09 अगस्त को मनाया जाता है।

आदिवासियो में बोली जाने वाली बोलियाँ/भाषाएँ : भारत में सभी आदिवासी भाषाओं को मुख्यतः तीन भाषा परिवारो में रखा गया है। द्रविड़, आस्ट्रिक और चीनी-तिब्बती। आदिवासी भाषाओं में भीली बोलने वालों की संख्या सबसे ज्यादा है जबकि दूसरे नम्बर पर गोंड़ी भाषा और तीसरे नम्बर पर संताली भाषा हैं। भारत में 114 मुख्य भाषाओं मे से 22 को ही संविधान की आठवी अनुसूची में शामिल किया गया है। इसमें हाल-फिलहाल शामिल की गई संताली और बोडो ही मात्र आदिवासी भाषाएँ हैं। अनुसूची में शामिल संताली (0.62%) सिंधी, नेपाली, बोडो (सभी 0.25%), मिताई (0.15%) डोगरी और संस्कृत भाषाएँ एक प्रतिशत से भी कम लोगों द्वारा बोली जाती है। जबकि भीली (0.67%), गोंड़ी (0.25%) टुल्क (0.19%) और कुडुख (0.17) प्रतिशत लोगों द्वारा व्यवहार में लाए जाने के बाद भी आठवीं अनुसूची में दर्ज नहीं की गई है।

आदिवासियों का रहन–सहन : आदिवासी समाज अपने अविश्वसनीय कार्यो, प्रथाओं तथा रहन-सहन के तरीके के लिए जाने जाते हैं। इस समाज के लोग अपने प्रिय लोगों की आत्मा को बचाने के लिए अपने ही जाति के मृत लोगों के राख खाने में विश्वास रखते हैं। वे नग्न घूमते हैं तथा खुले टेंट में छत के नीचे रहते हैं। सामान्य रुप से आदिवासी अपना जीवन जंगलों मे व्यतीत करते हैं। ये सामान्य भाषा का प्रयोग करते हैं। सामान्य, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन जीते हैं तथा जल, जंगल, जमीन से जुड़े हुए हैं।

आदिवासियों की संस्कृति : आदिवासी समाज के लोग अपने धार्मिक स्थलों, खेतों, घरों आदि जगहों पर एक विशिष्ट प्रकार का झण्डा लगाते है जो अन्य धर्मो के झण्डो से अलग होता है। आदिवासी झण्डो में सूरज, चाँद, तारे इत्यादी सभी प्रतीक विद्यमान होते हैं और ये झण्डे सभी रंग के हो सकते हैं। वो किसी रंग विशेष से बंधे नहीं होते वे प्रकृति में पाये जाने वाले सभी जीव-जन्तु, पर्वत, नदियाँ, नाले, खेत इन सभी की पूजा करते हैं। भागोरिया, चौदस, गलबजी, घट स्थापना दिवस, दिवासा-नवाई ''त्यौहार, ''बाबदेव पूजा'' और ''पाटला पूजा'' पिथोरा-इंद आदिवासी जनजाति के मुख्य त्यौहार और प्रथाएँ हैं। वे प्रमुख हिन्दू त्यौहार जैसे - होली, राखी की खुशी के साथ मनाते हैं। संस्कृति के अंतर्गत वंशागत शिल्प-तथ्यों, वस्तुओं, तकनीकी, प्रक्रियाओं, धारणाओं, अभ्यासों तथा मूल्यों का समावेश हो जाता है।

सुविचार :

1. भगवान से बढ़कर प्रकृति है क्योंकि प्रकृति में ही सारे तत्व पाये जाते हैं।
2. आदिवासी प्रकृति शक्ति को मानने वाले पहले मनुष्य शक्ति के उपासक है।
3. जल, जंगल, जमीन के संरक्षक वो,
   प्रकृति और संस्कृति के रक्षक जो।
   वेशभूषा विविधताओं को समेटे वो,
   कल जीवन शैली को बचाये जो,
   प्रकृति के उपासक आदिवासी वो।।

हमारे सपनों का भारत

क्यूँ डर-डर के जियें ऐ जिंदगी,
आओ मिलकर दूर करें, भारत और अपने मन की गंदगी।
स्त्री शिक्षा पर जोर होगा।
अपनी सभ्यता का डंका हर ओर होगा।
बाल मजदूरी और नशा होगा।
हर ओर खुशहाली का चेहरा होगा।
दहेज, कत्ल न बलात्कार होगा।
चारो दिशाओं मे बस प्यार होगा।
सांप्रदायिकता का बैर न होगा।
.... जैसा नरक न होगा।
कश्मीर जैसा स्वर्ग होगा।
संसद में सिर्फ काम होगा।
महंगाई का नाम न होगा।
आतंकवाद का खौफ न होगा।
हिन्दू, मुश्लिम, सिक्ख, ईसाई
धर्म का अलगाव न होगा।
पूरे भारत की जनता में एकता का प्रभाव है।
विश्व में हरियाली का गौरव गान होगा।

पुष्पेन्द्र पटेल
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

आत्मनिर्भर

उड़ने दो मिट्टी को आखिर कहाँ तक उड़ेगी
हवाओं ने जब साथ छोड़ा तो जमीन पर ही गिरेगी।

जो लोग अलोचना से डरते हैं, वे जमीन में कुछ नहीं कर पाते है।
सफर जितना कठिन होता है, मंजिल उतनी ही शानदार होता है।

इस फरेबी दुनिया में मुझें दुनियादारी नहीं आती,
जिसमें सिर्फ मेरा हित हो मुझें वो समझदारी नहीं आती,
झुठ को सच साबित करने की मुझे कलाकारी नहीं आती।

शायद मैं इस लिए पिछे हूँ, मुझे होशियारी नहीं आती,
बेशक लोग ना समझे मेरी वफादारी, मगर यारों मुझे गद्दारी नहीं आती।

कु. अंजली कुशवाहा
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

भारत माँ की पुकार

(01) उठो ! वतन के वीरों, जागो और बढ़े चलो।
धर्म की राह पर, अहिंसा और त्याग के पथ पर।
स्वीकार करो अधर्म की ललकार,
तुम्हें है भारत माँ की पुकार।
(02) मिटा दो अधर्म और हिंसा,
उठो ! और नाश करो दुष्टों का।
ऐसे हिफाजत करो माँ की,
दुश्मन भी थर्राये सीमा स्पर्श करने में वतन का।
(03) मिटा दो अत्याचार की आँधी,
करो कुछ ऐसा, हो कोने-कोने में शांति।
असत्य का विनाश हो, हो तो बस सत्य की क्रांति।
दुःखों का नाश हो, हवा में खुशियों की बहार,
उठो! वतन के वीरों, तुम्हें है भारत माँ की पुकार।
(04) भड़कने दो क्रोधग्नि भीतर,जला दो उसमें सारे
पाप। पुण्य-ही-पुण्य हो सर्वत्र,
हो केवल पवित्रता का संचार।
(05) वतन के कण-कण में भर दो देशभक्ति,
साहस और सीने में, धारण करो
ये चुनौती। भय भी दूर भागे
ऐसी फौलाद बनों, ना थको, ना
हारो बस बढ़े चलो। हवा में भी
हो बस माँ का प्यार, उठो! वतन
के वीरों, तुम्हें है भारत माँ की
पुकार।

(06) जागो ! और बढ़ो माँ की लाज
बचानें, दुनिया में वतन की
अनोखी इतिहास बनाने।
तुम्हारी वीरता में नहीं कोई संशय,
देश को सर्वसम्पन्न यही हो तुम्हारे कर्म का
आशय।
(07) वतन के कण-कण में हो हर्षोल्लास,
सर्वत्र हो देशभक्ति और वीरता का संचार।
उठो ! वतन के वीरों, जागो और बढ़ चलो,
तुम्हें है भारत माँ की पुकार।।

कु. सतरुपा पटेल, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

जिनगी के सार

जो चाहथस, ओ मिल जाना सफलता हरे।
अउ जो मिले हे, ओला चाहना ही प्रसन्नता हरे।।
ए जिनगी मा तैं कतको हार जा,
ए बात मायने नई रखे। काबर के ते केवल,
जीत बर ही पैदा हो हस।।
जीनगी में रिस्क ले, कभुझन डर।
या तो तोला जीत मिलही, अउ हार जाबे ता सीख मिलही।।
अगर तोला हारे से डर लगथे, ता जीत के भी मत सोंच।
सपना अउ लक्ष्य मा एक्केच अंतर हे,
सपना बर बिना मेहनत के नींद चाही,
फेर लक्ष्य बर बिना नींद के मेहनत।।
ते कथस अगर पैसा हो, ता में कुछ कर के दिखाओं।
अउ पैसा कथे ते कुछ कर के दिखा, फेर मे आहूँ।
ए जिनगी में ते कतको, धन-धन करले।
फेर मरे के बाद सोक पत्रिका में, निधन ही लिखे जाबे।।
याद रख केवल मरे मछरी ला ही,
पानी के बहाव चलाथे। जे मछरी के परान होथे,
ओ अपन रद्दा खुदे बनाथे।।

अगर ते सीस बनके काखरो, खुशी ला
नई लिख सकस।
त सीस मेटनी बनके काखरो, गम ला
ही मेट दे।।
जिनगी मा गिरना भी बने होथे, औकात
के पता चलथे।
बढथे हाथ जब उठाये बर, ता अपना
के पता चलथे।।
हित चाहने वाला, दूसर भी अपन हरे।
फेर अहित चाहे वाला, अपन भी दूसर हरे।।
अपन हौसला ला झन बता, तोर परेसानी कतका बड़े हे।
तोर परेसानी ला बता, तोर हौसला कतका बड़े हे।।
जिनगी में बने मनखे ला झन खोज,
तें खुदे बने मनखे बन जा।
तोर से मिलके सायद, काखरो तलास पूरा हो जाए।
मनखे बड़े हो या छोटे कोई फरक नई पडे।
ओखर कहानी बड़े होना चाहिए।।
याद रख जिनगी लम्बा नई, बल्कि बड़े होना चाहिए।।

यशपाल गौतम, अतिथि व्याख्याता शिक्षक (राजनीति शास्त्र)

महिला शिक्षा

उदय कुमार
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व होता है। जिस देश के लोग शिक्षित नहीं होते वहाँ पर आर्थिक और सामाजिक विकास की कल्पना नहीं कि जा सकती है, हमारे देश में भी शिक्षा की कमी है। हमारा भारत देश भी पुरुष प्रधान देश है और इसी कारण पुरुष ज्यादा पढ़े लिखे लोग होते हैं और महिलाओं को शिक्षा का अधिकार नहीं मिलने के कारण शिक्षा के क्षेत्र में कुछ महिलाऐं पिछड़ी हुई है। एक राष्ट्र को वास्तविक अर्थो में शिक्षित तभी कहा जा सकता है जब पुरुष और महिला समान रुप से शिक्षित होते है।

''आप किसी राष्ट्र में महिलाओं की स्थिति देखकर उस राष्ट्र के हालात बता सकते हैं।''

भारतीय समाज आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए नारी शिक्षा बेहद जरुरी है। महिला एवं पुरुष दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं, जिस तरह से साइकिल का संतुलन दोनों पहियों पर निर्भर होता है उसी तरीके से समाज का विकास भी पुरुषों और महिलाओं के कंधो पर आश्रित है। दोनों ही देश को नई ऊँचाईयों तक ले जाने की क्षमता रखते हैं। इसलिए दोनों को ही बराबर की शिक्षा का हक मिलना जरुरी है।

अगर महिलाएँ शिक्षित होंगी तो वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे सकेंगी क्योंकि बच्चों की पहली शिक्षक उसकी माँ होती है जो उन्हें जीवन की अच्छाईयों और बुराईयों से अवगत कराती है। एक अशिक्षित महिला में वो गुण नहीं होती है जिससे वह अपने परिवार और बच्चों का सही ख्याल रख सके।

सिनेमा और समाज

हिमांशु मिश्रा
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

सिनेमा जनसंचार एवं मनोरंजन का एक लोकप्रिय माध्यम है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है, यदि इस नजरिये से सिनेमा को देखा जाये तो सिनेमा को समाज की उन्तशिराओं मे बहने वाले रक्त की संज्ञा दी जा सकती है। सिनेमा भी समाज को प्रतिबिम्बित करता है।

सिनेमा अर्थात् चलचित्र का अविष्कार उन्नीसवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में हुआ था। चित्रों को संयोजित कर उन्हें दिखाने को ही चलचित्र कहते हैं। प्रारंभ से ही सिनेमा ने समाज पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रकार के प्रभाव छोड़े हैं।

भारत की पहली फिल्म 'सत्य हरिश्चन्द्र' देखकर बालक मोहनदास करमचंद गाँधी रो पड़े थे और 'राजा हरिश्चन्द्र' की सत्यनिष्ठा से प्रेरित होकर उन्होने आजीवन सत्य बोलने का व्रत ले लिया। वास्तव में इस फिल्म ने ही उन्हें मोहनदास से ''महात्मा गाँधी'' बनने की दिशा में पहला कदम रखने हेतु प्रेरित किया था। सिनेमा ने समय-समय पर समाज को नया मोड़ देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

इस प्रकार अच्छी सोंच वाले लोग फिल्मों के सकारात्मक पहलु को आत्मसात करते हैं, किन्तु समाज में दुर्बल चरित्र वाले लोग फिल्मो में दिखाई जाने वाले अश्लील एवं हिंसात्मक दृश्यों को देखकर व्यावहारिक दुनिया में भी ऊल-जलूल हरकत करने लगते हैं। इस प्रकार नकारात्मक फिल्मों से समाज में अपराध का ग्राफ भी प्रभावित होने लगता है। मानव समाज शर्मशार होने लगता है।

इसलिए इस सन्दर्भ में फिल्म निर्देशक का दायित्व सबसे अहम् होता है क्योंकि वह फिल्म के उद्देश्य और समाज पर पड़ने वाले उसके प्रभाव को भली-भाँति जानता है।

सत्यजीत राय का भी मानना है कि फिल्म की सबसे सूक्ष्म और गहरी अनुभूति केवल निर्देशक ही कर सकता है। अतः निर्देशक को ध्यान रखना चाहिए कि उनकी फिल्म समाज को नुकसान न पहुँचाने पाये, उन्हें यह भी समझाना होगा की फिल्मों में अपराध और हिंसा को कहानी का विषय बनाने का उद्देश्य उन दुर्गुणों की समाप्ति होती है, न की उनको बढ़ावा देना।

यह लोगों की बुद्धिक्षमता व सोंच पर भी निर्भर है क्योंकि वे सोंच के अनुसार ही उसे आत्मसात भी कर लेते हैं, जिसका प्रभाव समाज में साफ झलकता है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था - ''संसार की प्रत्येक चीज अच्छी है, पवित्र है, और सुन्दर है यदि आपको कुछ बुरा दिखाई देता है तो इसका अर्थ यह नहीं कि वह चीज बुरी है। इसका अर्थ यह है कि आपने उसे सही रोशनी में नही देखा।

कुछ लोगों का मानना है कि सिनेमा समाज के लिए अहितकर है और इसके कारण अपसंस्कृति को बढ़ावा मिलता है। समाज में फिल्मों के प्रभाव से फैली अश्लीलता एवं फैशन के नाम पर नंगेपन को इसके उदाहरण के रुप में प्रस्तुत किया जाता है किन्तु सिनेमा के बारे में यह कहना कि यह केवल बुराई फैलाता है, सिनेमा के साथ अन्याय करने के तुल्य होगा। क्योंकि सामाजिक बुराईयों को दूर करने मे भी सिनेमा सक्षम है।

छत्तीसगढ़ के डीपाडीह की ऐतिहासिक रचनाएँ

डीपाडीह के प्राचीन मंदिर स्मारक व किले का समूह :- डीपाडीह कन्हर और गलफुल्ला नदी के संगम पर स्थित महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है, यहाँ 01 किलोमीटर के क्षेत्र में प्राचीन भव्य मंदिरों के अवशेष फैले हैं। जनश्रुति के अनुसार यहाँ टांगीनाथ और सामत राजा के मध्य युद्ध हुआ था, जिसमें राजा के वीरगति प्राप्त होने के बाद उनकी रानियों ने बावड़ी में कूद कर प्राण त्याग कर दी थी अतः यह स्थल सामत सरना के नाम से प्रसिद्ध है। डीपाडीह में वर्ष 1986 में उत्खनन कार्य प्रारंभ कर क्रमशः भव्य मंदिरों को अनावृत्त किया गया है। उत्खनन में शैव, सौर, वैष्णव तथा शाक्त धर्म से संबंधित अवशेष प्राप्त हुए हैं। यहाँ के शिल्पकला में शास्त्रीय परंपरा और स्थानीय प्रवृत्तियों का सामंजस्य है और मौलिकता का संतुलन प्रवाह है।

पुरातात्विक प्रमाणों के आधार पर डीपाडीह का सांस्कृतिक वैभव 08वीं सदी से 12वीं सदी ईसवी तक प्रखरता से प्रकाशित होता रहा है।

यह स्थान छत्तीसगढ़ राज्य के बलरामपुर जिले में स्थित है। जो अम्बिकापुर से लगभग 75 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहाँ पहुँचने के लिए नियमित रुप से बस, ऑटो की सुविधा है। डीपाडीह के प्रमुख दार्शनिक स्थलों में से सामत सरना, रानी पोखर, चामुण्डा मंदिर, पंचायतन मंदिर आदि प्रमुख हैं। यहाँ पर अधिकांश शिव मंदिर ही है। यहाँ पर भगवान राम का भव्य महल था जहाँ अखण्ड रुप से ज्योति जलती रहती थी। इस कारण इसका नाम दीपा पड़ा तथा बाद में इसका नाम डीपाडीह हो गया।

हुलसी बाई, बुक लिफ्टर

जिंदगी

काश, जिंदगी सचमुच किताब होती
पढ़ सकता मैं कि आगे क्या होगा ?
क्या पाऊँगा मैं और क्या दिल खोयेगा ?
कब थोड़ी खुशी मिलेगी, कब दिल रोयेगा ?
काश दिल सचमुच किताब होती,
फाड़ सकता मैं उन लम्हों को
जिन्होने मुझे रुलाया है ...
जोड़ता कुछ पन्ने जिनकी
यादों ने मुझे हँसाया है ...
हिसाब तो लगा पाता कितना
खोया और कितना पाया है ?
काश जिंदगी सचमुच किताब होती,
वक्त से आँखें चुराकर पीछे चला जाता ...
टूटे सपनों को फिर से अरमानों से सजाता
कुछ पल के लिए मैं भी मुस्कुराता,
काश, जिंदगी सचमुच किताब होती।

परिंदे रुक मत मुझे तुझमें जान बाकी है,
मन्जिल दूर है, बहुत उड़ान बाकी है।

यूँ ही नहीं मिलती रब की मेहरबानी,
एक से बढ़कर एक इम्तेहान बाकी है।

जिंदगी की जंग में है हौसला जरुरी,
जीतने के लिए सारा जहांन बाकी है।।

कु. चन्द्रावती यादव
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

विद्यार्थी जीवन में समय का महत्व

विद्यार्थी जीवन काल में समय का सर्वाधिक महत्व है। समय का सदुपयोग करने वाले विद्यार्थी जीवन में एक सफल नागरिक बनता है।

इसके विपरित जो विद्यार्थी समय को अन्य की चीजों जैसे घुमने-फिरने में व्यर्थ करता है, वह अंत में रोता और पछताता है, क्योंकि वह चाहकर भी उस बीते हुए समय को वापस नहीं ला सकता है।

कबिरदास जी कहते हैं :-

´´काल करे से आज कर, आज करे सो अब..
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगी कब ...
´´

समय का सदुपयोग :

´´समय एक अमूल्य धन है´´ अर्थात समय धन से कहीं अधिक कीमत है, इसलिए समय को अमूल्य धन कहा गया है। जैसे - धन आज है, कल नष्ट हो जायेगा परसो फिर आ जायेग, लेकिन जो समय अतित में चला गया है, वह समय लाख प्रयत्न के बाद भी नहीं आयेगा। एक आम कहावत है- जो समय को नष्ट करता है, समय उसको नष्ट कर देता है।

समय ऐसा देवता है जो विद्यार्थी को सिकन्दर तथा नेपोलियम जैसा बना देता है। अपितु समूल नष्ट कर देता है।

समय संसार में अमीर - गरीब, ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं रखती वह नदी की धरा जैसे निरंतर बहती रहती है। इतिहास साक्षी है, जिस भी विद्यार्थी ने समय के महत्व को पहचाना है और उसका सदुपयोग किया है, वह उन्नती की पिढ़ियाँ चढ़ता गया है। इसके विपरित जिन्होने इसका तिरस्कार किया समय ने उसे बर्बाद कर दिया परन्तुतः विद्यार्थी जीवन में समय का सदुपयोग ही विकास, सफलता का कुँजी है।दुनिया में सबसे किमती चीज वक्त है, प्रत्येक विद्यार्थी के पास समान समय होता है, कोई उसी समय का सदुपयोग कर महारत हासिल करता है, तो कोई वहीं का वहीं होता है।´´

कु. सुषमा कुशवाहा, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

समय का महत्व

समय को जानों, समय को पहचानों,
समय तुम्हें नहीं पहचान पायेगा,
समय होत बड़ा बलशाली, इसकी लीला बड़ी निराली।
अपने सभी करम, ध्यारम समय के रहते कर डालों,
आज नहीं कल ऐसे, इसे मत टालों,
सभी कार्य समय रहते करों, इससे मत डरों,
डर गये तो मर जाओगे, अंतिम समय पछताओगे
दुनिया भूली माया मोह में, पता नहीं समय का खेल,
जो जाग गया सो जाग गया, जो जान गया इसका मोल,
तो जानो वह समय का राजा, दुःखों से न बजेगा बाजा।

जो आज जागेगा, वह कल सोयेगा, जो आज सोयेगा, फिर कभी जाग नहीं पायेगा।
इसलिए समय को जानों समय को पहचानों। इसलिए समय को जानों समय को पहचानों, समय तुम्हें नहीं पहचान पायेगा।
समय होत बड़ा बलशाली, इसकी लीला बड़ी निराली।

बेनी प्रसाद डेहरिया, अतिथि व्याख्याता भूगोल

अपना गाँव

यश कुमार पटवा
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

शहर, शहर है, गाँव, गाँव है ! मैं नही, हम में जीने वाला है, बहुत नहीं कम में जीने वाला है, आधुनिकता नहीं परम्पराओं मे जीने वाला है, अकेले नहीं परिवारों मे जीने वाला है, जहाँ धरती माँ के दुलारों की छाँव है, शहर-शहर है, गाँव-गाँव है।

जहाँ सर्दियों की सुबह और गर्मियों की शाम है, दिन भर धुप में बदन जलाकर, रात्रि का विश्राम है, जहाँ शुद्ध जल और पावन समीर है, जहाँ के लोगों का बिकता नहीं जमीर है, जहाँ के गायों के लिए, पीपल की बनी छाँव है, शहर-शहर है, गाँव-गाँव है।

जहाँ संगीत का साज है, धर्म-जाति, रीति-रिवाज है,
जहाँ नदियों का कल-कल पानी है, दादा-दादी, नाना-नानी की कहानी है,
जहाँ मैं-तु नहीं, अपनेपन का भाव है, शहर-शहर है, गाँव-गाँव है।

महाविद्यालय में स्वच्छ वातावरण के लिए प्रयास

महाविद्यालय में स्वच्छ एवं पठनयोग्य वातावरण बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयास किये जाते रहे हैं। महाविद्यालयीन समिति के साथ-साथ राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों द्वारा भी विशेष प्रकार से प्रयास किये गये हैं। प्रत्येक कक्ष के पास एक डस्टबिन अनिवार्य रुप से रखे गये हैं। एक पहल के रूप में महाविद्यालय के परिसर के अंदर कभी-भी प्लाास्टिक कचरे वाले पदार्थो का उपयोग नहीं किया जाता है। विभिन्न अवसरों पर उपयोग होने वाले दोने भी पत्तियों के बने होते हैं जो पर्यावरण को किसी भी प्रकार से क्षति नहीं पहुँचाते। राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयं सेवकों द्वारा प्रत्येक शनिवार को स्वच्छता की जाती है, जिसमें कक्षओं की सफाई, गार्डन की सफाई, परिसर के आस-पास की आवश्यक सफाई, गमलों मे मिट्‌टी भरना और सफाई आदि कार्य किये जाते हैं।

महाविद्यालय को हरियाली युक्त बनाये रखने के लिए ईको-क्लब का निर्माण किया गया है। इसके अतिरिक्त वृक्षों एवं छोटे पौधों के सुरक्षा के लिए दो या तीन छात्रों के द्वारा एक पौधे को वर्ष भर संरक्षित किया जाता है और उसे खाद, पानी दिया जाते रहता है। महाविद्यालय परिसर के अंदर और बाहर भी विभिन्न प्रकार के फूल के पौधे भी छात्र-छात्रों द्वारा लगाया गया है जो महाविद्यालय को स्वच्छ एवं सुन्दर वातावरण प्रदान करता है।

स्वच्छता को बढ़ावा देने के उद्‌देश्य से प्रतियोगिताएँ भी आयोजित किये जाते हैं, जिससे छात्रों के नये-नये विचार सामने आते हैं। इस प्रकार की गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया जाता है जो उन्हे और लोगों को स्वच्छता के लिए प्रेरित करती है। यह सभी गतिविधियाँ महाविद्यालय परिसर को स्वच्छ, सुन्दर एवं प्लास्टिक मुक्त बनाने में सहयोगी हैं।

इस प्रकार के स्वच्छता का उद्‌देश्य है कि यहाँ पढ़ने वाले छात्र-छात्राएँ अपने घरो में भी इसी प्रकार से स्वच्छता बनाये रखें। इससे उनके पड़ोसी भी स्वच्छता के लिए प्रेरित होंगे और पूरा गाँव व समाज भी स्वच्छ होगा। यह सम्पूर्ण राष्ट्र को स्वच्छ बनाने वाला पहल होगा।

भटकता आज का युवा पीढ़ी

भारत की वर्तमान युवा पीढ़ी बेरोजगारी की समस्या से ग्रस्त है, उनके सामने सही दिशाएँ नही है। देश का भविष्य नागरिकों की प्रगति पर निर्भर करता है, प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका युवा नागरिकों की होती है अन्य नागरिकों का योगदान भी कम नहीं होता। लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि देश की रचनात्मक शक्ति युवा शक्ति है।

युवा पीढ़ी का भटकना मतलब देश के विकास मॉडल का भटकना। युवा पीढ़ी का समस्या ग्रस्त होना राष्ट्रीय जीवन का संकटपूर्ण होना। इन सबका एक मात्र कारण है सही शिक्षा का न होना। वो कहते हैं ना ´´थोड़ा पढे तो हर छुटे, ज्यादा पढ़े तो घर´´ इन सब चीजों का शुरुआत होता है, युवाओं के भटकने से और इसमें महत्वपूर्ण भूमिका राजनीति निभाता है। युवाओं का व्यक्तिगत चरित्र और मानसिकता विभाजित सी हो गई है। वे कई प्रकार के दुविधाओ में है उनका विवेक कुंढित सा हो गया। उसमें निर्णय एवं संकल्प का अभाव है। छात्र युवाओं का आचरण भी नितांत बिगड़ता जा रहा है, किसी प्रकार के अनुशासन, बंधन, या मर्यादा से उनका कोई वास्ता नहीं है। पढ़ने-लिखनें मे उनकी कोई रुची नही वे अनुचित साधनों की बदौलत परीक्षा पास करना चाहते हैं। उनकी शार्ट-कट की प्रवृत्ति बढ़ गई है। वे आपराधिक किस्म के बनते जा रहे हैं, तोड़-फोड़, मारपीट, गाली-गलौच और सबसे हिंसा ये सब मानो तो उनकी आदत सी बन गयी है, वो भी वहाँ जहाँ हमे जिन्दगी क्या होती है इस कैसे अपने और दूसरों के काम मे लाये ये सारी चीजें हमे सिखाया जाता है जिसे हम मंदिर की तरह पूजते हैं। जहाँ के शिक्षक देवता की तरह होते हैं, आज के युवाओं की अकांक्षा मोटी तनख्वाह वाले आरामदेह नौकरियों मे सीमित हो गई है। परंतु उनकी शैक्षणिक योग्यता स्तर बुरी तरह गिर गया है। उनके सामने कोई स्पष्ट भविष्य नहीं है, वे लक्ष्य भ्रष्ट हो गये हैं उनका अपना कोई सपना ही नहीं है। भ्रष्ट तरिकों के प्रति उनका आकर्षण बढ़ता ही जा रहा है, वे रातो-रात बिना परिश्रम किये सब कुछ पाना चाहते हैं। गलत किस्म की फिल्मों ने भ्रष्टाचार, हिंसा और अपराध के प्रति उनका आकर्षण बढाने में एक संगीन भूमिका निभाई है। देश में जिस तरह की राजनीतिक हवा बह रही है, उसने युवाओं को दिशाहीन कर दिया है। वास्तव में पूरे भारत में छात्रों का राजनीतीकरण हो चुका है। अतः छात्रों को चाहिए कि वे विधार्जन के प्रारंभिक दायित्वों का निर्वाह समुचित रीति से करें। देश को उनके कुशल नेतृत्वों की जरुरत है। देश को सही दिशा में ले जाना उनका परम कर्तव्य है।

विकास कुमार
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

स्कूल से महाविद्यालय की ओर

कॉलेज लाईफ किसी व्यक्ति के जीवन का सबसे उल्लेखनीय और प्यारा समय होता है। स्कूल लाईफ के विपरीत, कॉलेज लाईफ हमें उन सभी एक अनुभवों से अवगत कराती है जो हमें हमेशा अपने स्कूल जीवन के बाद अनुभव करते हैं।

जहॉ कुछ लोग दोस्तों के साथ पार्टी करके अपना कॉलेज जीवन व्यतीत करते हैं, वहीं अन्य अपने करियर को लेकर अधिक सतर्क हो जाते हैं और कड़ी मेहनत करते हैं। स्कूल और कॉलेज जीवन दोनो ही व्यक्ति के जीवन का सबसे यादगार समय होता है लेकिन दोनो एक दूसरे से काफी अलग होता है। कॉलेज जीवन हमें एक नये वातावरण में उजागर करते है जहॉ हमें नई चीजें सीखनी पड़ती है और नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

हम अपने आधे युवा जीवन स्कूल में बिताते है और इस तरह हम उस वातावरण में रहते हैं। लेकिन कॉलेज लाईफ केवल तीन साल के लिए है, जहॉ हर साल हमारे लिए चुनौतियों और सबक का परिचय होता है। साथ ही हमें सभी फैसले लेने और कठिन अध्ययन करके अपने करियर को आकार देने का मौका मिलता है। कॉलेज का जीवन न केवल अध्ययन के बारे में है बल्कि विभिन्न गतिविधियों और चुनौतियों के माध्यम से किसी व्यक्ति के समग्र विकास के बारे में है।

प्रकृति का संदेश

चिड़ियों से है उड़ना सीखा,
तितली से इठलाना।
भवरों की गुंजन से सीखा,
राग मधुरतम गान।

तेज लिया सूरज से हमने,
चाँद से शीतल छाया।
टिम-टिम करते तारों की,
हम समझ गए सब माया।

सागर ने सिखलाई हमको,
गहरी सोंच की धारा।
गगन चुम्बी पर्वत से सीखा,
हो ऊचा लक्ष्य हमारा।

समय की टिक-टिक ने समझाया,
सदा ही चलते रहना।
मुश्किल कितनी आन पड़े,
पर कभी न धीरज खोना।

प्रकृति के कण-कण में है,
सुन्दर संदेश समाया।
ईश्वर ने इसके द्वारा ज्यों
अपना रुप दिखाया।

आशिष कुमार पाण्डेय
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

तुम्हारी यादें

एक आकृति हूँ मै, और इस पर इठला रहा हूँ मैं। न जाने उसकी मुस्कुराहट का क्या अर्थ है,
पर उसकी एक मुस्कुराहट पर निसार हो रहा हूँ मैं। न जाने हवा में कैसा नशा छा रहा है,
और उस नशे को पी रहा हूँ मैं। न जाने घड़ी की सुइयों में क्या ढूँढ रहा हूँ मैं,
या फिर किन्हीं लम्हों को गिन रहा हूँ मै। शायद उस खुदा को मालुम न हो,
उसी के लिए जिंदगी जी रहा हूँ मैं। सपनों के बादल पर हूँ मै,
यह सपना टूट गया तो क्या रह पाऊँगा मैं।
डर तो बहुत लग रहा है मन को, पर डर को दबा रहा हूँ मैं।
धन्यवाद !

आकाश कुमार, बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

देशभक्ति दोहावली

आनंद कुमार कनौजिया
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

(01) गुल खिले गुलशन खिले और खिले गुलदस्तें।
मुस्लिम भाई को सलाम, हिन्दू भाई को नमस्ते।।

(02) चाँद न बदला, सूरज न बदला, बदले जगत की रीत।
पैसों से मत बदलना यारों, अपने वतन की प्रीत।।

(03) हर पत्थर यदि हीरा होता, तो पहाडों व जंगलों मे न होता।
अगर हर व्यक्ति बेईमान होता, तो इंसान का कद न होता।।

(04) जाति धर्म की बात छोड़ो, आओ अब गले मिल जायें।
अपनी जननी के खातिर यारों अपना कर्तव्य निभाएँ।।

(05) हर पत्थर एक सोना, हर कण-कण एक मोती है।
वतन पे मरने वाले की पूजा हरदम होती है।।

(06) बधाएँ कब बाँध सकी है आगे बढ़नें वालों को।
विपदाएँ कब रोक सकी है, पथ पर चलनें वालों को।।

(07) मुश्किल दिल की इरादें अजमाती है,
स्वप्न की निगाहों से हटाती है।
हौसला मत हार, गिरकर ये मुसाफिर है,
ठोकरें इंसान को चलना सिखाती है।।

(08) जुर्म किए तीनों गए धर्म, धन और वंश।
यकिन न हो तो देख लो रावण, कौरव और कंस।।

(09) कोई हँसकर मरा कोई रोकर मरा।
जिंदगी पाई उसने जो कुछ होकर मरा।।

(10) सागर भी जिसको रास्ता दे,
जिसे हर पर्वत करे सलाम।
ये दुनिया हम बनकर तुम्हें दिखा देंगे,
ए.पी.जे. अब्दुल कलाम।।

(11) हर बच्चा फौलाद यहाँ, वीरांगना हर नारी है।
बदलने वाले परवेज नहीं, हम छत्तीसगढ़ीया हैं।

(12) आतंकवाद फैलाते हो पाक, यही तेरा काम है।
मिसाइल से हमको क्या धमकायेगा, यहाँ अब्दुल
कलाम हैं।

(13) धरा बेच देंगे, गगन बेच देंगे,
कली बेच देंगे, कुसुम बेच देंगे।
कलम की पुजारी कही सो गये तो,
वतन के पुजारी वतन बेच देंगे।।

(14) खा लो दही, छोड़ो न छछिया।
लड़नें की जरुरत न करना, उड़ा दूँगा खटिया।।

(15) घुंघरु शोभा देती है थिरकते हुए पाँवों में,
इन कोमल चरणों मे नहीं।
भारत अपने दम पर अमेरिका, चीन, पाकिस्तान के
शरणों मे नहीं।।

वृक्ष

धरती की बस यही पुकार,
पेंड़ लगाओ बार-बार।

आओ मिलकर कसम खाएँ,
अपनी धरती हरित बनाएँ।

धरती पर हरियाली हो,
जीवन में खुशहाली हो।

पेंड़ धरती की शान है,
जीवन की मुस्कान है।

पेंड़ पौधों को पानी दें,
जीवन की यही निशानी दें।

आओ पेंड़ लगायें हम,
पेंड़ लगाकर जग महका कर।

जीवन खुशी बनाएँ हम,
आओ पेंड़ लगाएँ हम।

लीलावती, बी.ए. द्वितीय वर्ष

दैनिक जीवन में विज्ञान के व्यवहारिक अनुप्रयोग

मानन जीवन में उसके चारो ओर न जाने कितने आश्चर्य व विचित्रता भरी पड़ी है। मानव में जब से बुद्धि का विकास हुआ है तब से उसने अपने बारे में और अपने चारो तरफ उपस्थित वातावरण के बारे में जानने की जिज्ञासु प्रवृत्ति हमेंशा से रहा है। हमारा जीवन एवं सृष्टि का विकास विज्ञान के नियमों एवं सिद्धांतो पर ही आधारित है। हम लोग अपने दैनिक जीवन में जीतने भी कार्य करते है उससे कहीं न कहीं विज्ञान का सिद्धांत व नियम ही कार्य करता है। अगर हम इस नियम व सिद्धांत को व्यवहारिक तरीके से समझ जायेंगे तो हम अपने दैनिक कार्य को बहुत ही सरल व अपने जीवन को बेहतर बना सकेंगे।

उदाहरण के तौर पर भौतिक के ही एक सिद्धांत घर्षण को ही ले लेते हैं, इसका हमारे रोजमर्रा की जिंदगी में बहुत ही महत्व है। घर्षण एक बल है जो दो तलों, दो सतहों के बीच कार्य करता है। अगर यह घर्षण बल न रहे तो शायद जो मै यह लेख लिख रहा हूँ।